कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य

गुजरात के धंधुका नगर में चाचिग नाम का एक सेठ रहता था। उसकी पत्नी थी पाहिनी देवी। एक रात पाहिनीदेवी ने स्वप्न देखा–

दो सुन्दर हाथ उसकी तरफ बढ़ रहे हैं

पाहिनी ! ले मैं तुझे एक दिव्य रत्न दे रही हूँ।

पाहिनी वह रत्न लेकर गुरुदेव श्री देवचन्द्रसूरी के पास जाती है–

पाहिनी ने दोनों हाथ बढ़ाये, देवी ने उसकी हथेली पर रत्न रख दिया।

गुरुदेव आप यह रत्न ग्रहण कीजिएं।

गुरुदेव ने पाहिनी से रत्न ग्रहण कर लिया।

प्रातः एक पड़ोसन ने आकर कहा—

पाहिनी बहन, सुना है, आचार्यश्री देवचन्द्र सूरि जी नगर में पधारे हैं। दर्शन करने चलोगी न ?

हाँ-हाँ, ठहरो, अभी तैयार होती हूँ।

पाहिनी उपाश्रय में आई। आचार्यश्री के दर्शन कर उसने रात के स्वप्न की बात कही। आचार्यश्री कुछ विचार कर बोले—

बहन ! तुम्हें एक श्रेष्ठ रत्न जैसा पुत्र प्राप्त होगा। तुमने वह रत्न मुझे दिया है, इसका अर्थ है, तुम मुझे शिष्य भिक्षा दोगी।

समय पर पाहिनी ने एक पुत्र को जन्म दिया। चाचिग सेठ ने पुत्र का जन्म महोत्सव मनाया। बुआ ने नाम रखा—

इस बालक को चंगदेव कहेंगे।

देखो, बालक का मुखड़ा कैसा चाँद सा चमक रहा है।

वि. सं. १९४५ कार्तिक शुक्ल १५।

पाँच-छः वर्ष का होने पर चंगदेव को पाठशाला भेजा गया। उसका विनय और विवेक देखकर गुरुजी प्रसन्न हो गये। बोले–

सेठ तुम्हारा पुत्र एक दिन कोई महापुरुष बनेगा। इस छोटी-सी उम्र में ऐसा विवेक और इतना विनय?

एक दिन माता के साथ चंगदेव श्री देवचन्द्र सूरि के दर्शन करने गया। वे मन्दिर में भगवान की प्रदक्षिणा कर रहे थे। पाहिनी भी खड़ी-खड़ी परमात्मा की स्तुति करने लगी। तभी शरारती चंगदेव जाकर गुरुदेव के आसन पर बैठ गया।

गुरुदेव और पाहिनी की नजर उस पर पड़ी तो चंगदेव खिलखिलाकर हँस पड़ा। आचार्यश्री भी हँसते हुए बोले–

बहन ! तुझे अपना स्वप्न याद है? देख, तेरा लाड़ला खुद ही मेरे आसन पर बैठ गया है। अब इसे हमें सौंप दे।

पाहिनी मौन रही।

एक दिन गुरुदेव ने चाचिग सेठ से कहा–

सेठ, तुम्हारा पुत्र बहुत भाग्यशाली होगा।

गुरुदेव, आपकी वाणी सत्य हो।

सेठ, हमारा वचन सत्य करने के लिए तुम्हें भी मोह त्यागना पड़ेगा। वह हीरा है, जौहरी के हाथ में देना होगा। बोलो....

गुरुदेव, मैं पहले चंगदेव से भी पुछूँगा।